हज्ज के बाद

[हिन्दी – **Hindi** – هندي]

डा. फालेह बिन मुहम्मद अल–सुग़ैयिर

अनुवाद: अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह

2011 - 1432

IslamHouse.com

﴿ ما ذا بعد الحج ﴾

« باللغة الهندية »

د. فالح بن محمد الصغير

ترجمة: عطاء الرحمن ضياء الله

2011 - 1432

IslamHouse.com

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मैं अति मेहरबान और दयालु अल्लाह के नाम से आरम्भ करता हूँ।

إن الحمد لله نحمده ونستعينه ونستغفره، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا، وسيئات أعمالنا، من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وبعد:

हर प्रकार की हम्द व सना (प्रशंसा और गुणगान) अल्लाह के लिए योग्य है, हम उसी की प्रशंसा करते हैं, उसी से मदद मांगते और उसी से क्षमा याचना करते हैं, तथा हम अपने नफ़्स की बुराई और अपने बुरे कामों से अल्लाह की पनाह में आते हैं, जिसे अल्लाह तआला हिदायत दे दे उसे कोई पथभ्रष्ट (गुमराह) करने वाला नहीं, और जिसे गुमराह कर दे उसे कोई हिदायत देने वाला नहीं। हम्द व सना के बाद :

हज्ज के बाद

सभी प्रकार की प्रशंसा केवल अल्लाह के लिए योग्य है जिसकी नेमत से सत्यकार संपन्न होते हैं और जिसकी कृपा से नेकियाँ स्वीकार होती हैं। मैं उसकी स्तुति करता हूँ और उसका आभारी होता हूँ और इस बात की गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई सच्चा पूज्य नहीं

तथा मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उसके बंदे और पैगंबर हैं, अल्लाह तआला आप पर और आपके सहाबा और आपकी संतान पर दुरूद व सलाम भेजे। इसके बाद : हज्ज बीत गया और समाप्त हो गया . . . और हज्ज के महीने अपनी भलाईयों और बर्कतों के साथ बीत गए।

वे दिन बीत गए और मुसलमानों ने उनमें हज्ज कर लिए, उनमें से कुछ फर्ज़ हज्ज करने वाले और कुछ नफ़्ल हज्ज करने वाले थ। उनमें से जिनके हज्ज स्वीकृत (मक़बूल) हो गए, वे अपने पापों से क्षमा प्राप्त करके उस दिन के समान वापस लौटे जिस दिन कि उनकी माओं ने उन्हें जना था। अतः सफलता प्राप्त करने वालों को बधाई हो, और जिन लोगों का हज्ज क़बूल हो गया उनका सौभाग्य कितना महान है। (अल्लाह तआला का फरमान है :)

﴿إنما يتقبل الله من المتقين﴾ (المائدة : ٢٧)

''अल्लाह ईश्भय रखने वालों (परहेज़गारों) से ही क़बूल करता है।'' (सूरतुल माइदा : 27).

मुसलमान को यह बात भली भांति जान लेना चाहिए कि आज्ञाकारिता (नेकी) के स्वीकार होने के कुछ लक्षण और निशानियाँ हैं, चुनांचे

आज्ञाकारिता (नेकी) के क़बूल होने की निशानी यह है कि नेकी के बाद नेकी किया जाए और उसके अस्वीकार कर दिए जाने की निशानी उसके बाद बुराई (पाप) करना है।

जब हाजी लौट आए और अपने अंदर अल्लाह की आज्ञाकारिता की ओर आकर्षण, भलाई की अभिरूचि, धर्म प्रतिबद्धता में वृद्धि और गुनाहों और अवज्ञा से दूरी को पाए, तो उसे जान लेना चाहिए कि यह उसके हज्ज के मक़्बूल (स्वीकृत) होने की पहचान है।

और यदि वह अपने अंदर अल्लाह तआला की आज्ञाकारिता से दूरी, भलाई से विमुखता, अवज्ञा और गुनाहों की ओर वापसी, पाप का करना पाए तो उसे जान लेना चाहिए कि उसे अपनी स्थिति पर ईमानदारी के साथ पुनर्विचार करने की आवश्यकता है।

ऐ वो लोगो जिन्हों ने अल्लाह के पवित्र घर का हज्ज किया है और उन प्रतिष्ठित दिनों से गुज़रे हैं और उन पवित्र और प्रतिष्ठा वाले स्थानों में समय बिताया है, आपका यह अमल आपकी ओर से मार्गदर्शन के रास्ते और सत्य के मार्ग पर प्रारंभिक बिंदु होना चाहिए।

ऐ लोगो जिन्हों ने हज्ज के बारे में अल्लाह की पुकार का उत्तर दिया हैं और लब्बैका अल्लाहुम्मा लब्बैक पुकारा है, तुम्हारा सभी मामलों में अल्लाह के पुकार का उत्तर देना हमेशा होना चाहिए और तुम्हें उसकी

आज्ञाकारिता निरंतर और लगातार करनी चाहिए। क्योंकि हज्ज के महीनों का पालनहार ही अन्य सभी महीनों का भी पालनहार है, और हमें मरते दम तक सहायता मांगने और उपासना करने का आदेश दिया गया है :

﴿واعبد ربك حتى يأتيك اليقين﴾ (الحجر : ٩٩)

''और आप अपने पालनहार की उपासना करते रहें यहाँ तक कि आप को मौत आ जाए।'' (सूरतुल हिज्र : 99)

मेरे मुस्लिम भाई ! भलाई के मौसम मनुष्य के जीवन में एक अस्थायी परिवर्तन नहीं हैं बल्कि वह खेल–कूद, लापरवाही, गफलत, कोताही, कमी के जीवन से आज्ञाकारिता और अल्लाह तआला की संपूर्ण उपासना की ओर पूरी तह परिवर्तन का नाम है।

भलाई के मौसम जैसाकि कुछ लोग समझते हैं ऐसे स्टेश्न या पड़ाव नहीं हैं जिसमें मनुष्य अपने गुनाहों को कम कर ले और अपने पापों से से छुटकारा प्राप्त कर ले फिर वह वापस लौटकर दूसरे गुनाहों का बोझ उठाए। यह गलत समझ है और जो लोग ऐसा समझते हैं वे इन मौसमों की वास्तविकता को पान में गलती कर रहे हैं, बल्कि ये मौसम गाफिलों और लापरवाहों को सावधान करने, कोताही करने वालों को

नसीहत करने के लिए पड़ाव हैं ताकि वे अपने पापों को त्याग कर, उन पर पछतावा करते हुए और उसके छोड़ने का पक्का संकल्त रखते हुए अल्लाह की तरफ आकर्षित हो जाएं।

﴿وإني لغفار لمن تاب وآمن وعمل صالحاً ثم اهتدى﴾ (طه : ٨٢)

''और निःसंदेह मैं उन्हें क्षमा कर देने वाला हूँ जो माफी माँगें, ईमान लायें, नेकी के काम करें और सीधे रास्ते पर भी रहें।'' (सूरत ताहा : 82)

कुछ लोग अक्सर अपने नफ्स के धोखे का शिकार और अपने शैतानों के जालों (फंदों) का शिकर बनकर जीवन बिताते हैं यहाँ तक कि इसी हालत पर उनकी मौत आ जाती है।

ऐ अल्लाह के पवित्र घर का हज्ज करने वालो उन लोगों में से न बनो जो भवन निर्माण करते हैं फिर उसे उसके आधार से ही ढाह देते हैं।

﴿كالتي نقضت غزلها من بعد قوة أنكاثاً﴾ (النحل : ٩٢)

''उस (औरत) के समान जिसने अपना सूत मज़बूत कातने के बावजूद टुकड़े–टुकड़े कर दिया।'' (सूरतुन नह्ल : 92)

एक बहुत ही गंभीर और खतरनाक बात जिससे हर मुसलमान को सावधान रहना चाहिए यह है कि कुछ लोग अल्लाह के पवित्र घर का हज्ज करते हैं परंतु उससे बड़ी चीज़ को त्याग कर देते हैं। कुछ लोग ऐसे हैं जो फर्ज़ नमाज़ें नही पढ़ते हैं और इसमें कोई संदेह नहीं कि ऐसे व्यक्ति का हज्ज नहीं है। क्योंकि वह नमाज़ को छोड़ने वाला है और नमाज़ छोड़ देने वाले के बारे में कड़ी चेतावनी (धमकी) आई है। अल्लाह तआला ने फरमाया :

﴿ما سلككم في سقر* قالوا لم نك من المصلين﴾ (المدثر : ٤٢-٤٣)

''तुम्हें जहन्नम में किस बात ने डाला। वे जवाब देंगे कि हम नमाज़ी नहीं थे।'' (सूरतुल मुद्दस्सिर : 42–43)

तथा अल्लाह सर्वशक्तिमान ने फरमाया :

﴿فإن تابوا وأقاموا الصلاة وآتوا الزكاة فإخوانكم في الدين﴾ (التوبة : ١١)

''अगर ये तौबा (पश्चाताप) कर लें और नमाज़ की पाबन्दी करने लगें और ज़कात देते रहें तो तुम्हारे दीनी भाई हैं।'' (सूरतुत्तौबा : 11)

तथा एक दूसरे स्थान पर अल्लाह का फरमान है :

﴿فإن تابوا وأقاموا الصلاة وآتوا الزكاة فخلوا سبيلهم﴾ (التوبة : ٥)

''अगर वे तौबा (पश्चाताप) कर लें और नमाज़ की पाबन्दी करने लगें और ज़कात अदा करने लगें तो तुम उनका रास्ता छोड़ दो।'' (सूरतुत्तौबा : 5)

तथा अल्लाह के पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया :

((إن بين الرجل وبين الشرك والكفر ترك الصلاة))

''निःसंदेह (मुस्लिम) आदमी के बीच और कुफ्र व शिर्क के बीच नमाज़ छोड़ने का अंतर है।'' इसे मुस्लिम (हदीस संख्या : 88) ने वर्णन किया है।

तथा तिर्मिज़ी ने बुरैदा रज़ियल्लाहु अन्हु की हदीस से नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत किया है कि आप ने फरमाया :

((العهد الذي بيننا وبينهم الصلاة فمن تركها فقد كفر.))

''हमारे और उनके बीच प्रतिज्ञा (अहद व पैमान) नमाज़ है। अतः जिसने उसे छोड़ दिया उसने कुफ़्र किया।'' (हदीस संख्या : 2756)

तथा तिर्मिज़ी ने किताबुल ईमान में सही सनद के साथ महान प्रतिष्ठावान ताबई शक़ीक़ बिन अब्दुल्लाह रहिमहुल्लाह से रिवायत किया है कि उन्हों ने कहा : मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा किसी अमल के छोड़ने को कुफ़्र नहीं समझते थे सिवाय नमाज़ के।'' (हदीस संख्या : 2757).

तथा कुछ लोग अल्लाह के पवित्र घर का हज्ज करते हैं लेकिन वे ज़कात नहीं देते हैं, जबकि अल्लाह सर्वशक्तिमान की किताब (कुर्आन) में ज़कात का नमाज़ के साथ उल्लेख किया गया है, अल्लाह तआला ने फरमाया :

﴿وأقيموا الصلاة وآتوا الزكاة﴾ (البقرة : ٤٣)

''और नमाज़ क़ायम करो और ज़कात दो।'' (सूरतुल बक़रा : 43)

तथा पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया :

((أمرت أن أقاتل الناس حتى يشهدوا أن لا إله إلا الله وأن محمداً رسول الله ويقيموا الصلاة ويؤتوا الزكاة فإذا فعلوا ذلك عصموا مني دمائهم وأموالهم إلا بحق الإسلام وحسابهم على الله...))

''मुझे आदेश दिया गया है कि लोगों से जिहाद करता रहूँ यहाँ तक कि वे ला–इलाहा–इल्लल्लाह और मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह (अर्थात् अल्लाह के अलावा कोई सत्य पूज्य नहीं और मुहम्मद अल्लाह के संदेष्टा हैं) की गवाही दें, नमाज़ क़ायम करें और ज़कात दें, यदि उन्हों ने इसे कर लिया तो उन्हों ने अपने जान और माल को मुझ से बचा लिया, परंतु इस्लाम का अधिकार शेष रहेगा और उनका हिसाब अल्लाह पर है . . . '' इसे बुखारी (हदीस संख्या : 25) व मुस्लिम (हदीस संख्या : 22) ने इब्ने उमर की हदीस से रिवायत किया है।

तथा अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने ज़कात रोकने वालों से लड़ाई की और आप ने अपनी वह सुप्रसिद्ध बात कही : ''अल्लाह की क़सम ! जो व्यक्ति नमाज़ और ज़कात के बीच अंतर करेगा मैं उस से लड़ाई करूँगा। अल्लाह की क़सम ! यदि एक रस्सी या बकरी का एक बच्चा जिसे वे अल्लाह के पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को दिया करते थे, मुझसे रोक लिए तो मैं उस पर उनसे लड़ाई करूँगा।'' (बुखारी, हदीस संख्या : 7284, मुस्लिम, हदीस संख्या : 32)

तथा कुछ लोग हज्ज करते हैं परंतु वे रमज़ान का रोज़ा नहीं रखते हैं, जबकि रोज़े पर हज्ज से अधिक बल दिया गया है और वह हज्ज के अनिवार्य होने से बहुत पहले अनिवार्य हुआ है। ये लोग जो हज्ज तो करते हैं परंतु दूसरे स्तंभों को उपेक्षित (अनदेखी) कर देते हैं, वे उस व्यक्ति के समान हैं जो एक सिर कटे हुए शरीर के किसी अंग का इलाज करता है।

मुसलमान पर अनिवार्य यह है कि वह अपने धर्म की रक्षा और उसकी संपूर्णता, तथा उसे नष्ट होने और उसमें गड़बड़ी पैदा होने से सुरक्षित रखने के प्रति उत्सुक हो। चुनांचे वह कर्तव्यों का पालन करे और निषिद्ध चीज़ों को त्याग दे, और अल्लाह के धर्म पर दृढ़ता पूर्वक जमा रहे यहाँ तक कि उसकी मृत्यु आ जाए। अल्लाह सर्वशक्तिमान ने फरमाया :

﴿إن الذين قالوا ربنا الله ثم استقاموا تتنزل عليهم الملائكة ألا تخافوا ولا تحزنوا وأبشروا بالجنة التي كنتم توعدون﴾ (فصلت : ٣٠)

''जिन लोगों ने कहा कि हमारा पालनहार अल्लाह है फिर वे उसी पर जमे रहे, तो उनके पास फरिश्ते (यह कहते हुए) आते हैं कि तुम कुछ

भी भयभीत और दुखी न हो, (बल्कि) उस स्वर्ग की शुभसूचना सुन लो जिसका तुमसे वादा किया जा रहा था।'' (सूरत फुस्सिलत : 30).

हज्ज के बाद सबसे महत्वपूर्ण चीज़ यह है कि मुसलमान अपने नफ़्स पर पुनर्विचार करे और जो कार्य (आमाल) पीछे बीत चुके हैं उन पर अपना मुहासबा (निरीक्षण) करे, फिर अपने लिए एक कार्यक्रम निर्धारित कर ले जिसका वह अल्लाह से सहायता लेते हुए अदायगी कर सकता है ताकि हज्ज में उसने जो निर्माण किया है वह पूरा हो जाए।

ये सभी चीज़ें इसलिए हैं ताकि बंदा, अल्लाह की तौफीक़ से हज्ज के फरीज़ा की अदायगी करने के बाद, सबसे महत्वपूर्ण कार्य की रक्षा करे।

मैं अल्लाह तआला से प्रार्थना करता हूँ कि वह सब के हज्ज को स्वीकार करे और उसे मबरूर (स्वीकृत) हज्ज बनाए, और उनकी कोशिश को सराहनीय बनाये और उनके पाप को क्षमा कर दे। तथा मैं अल्लाह तआला से कथन और कर्म में इख़्लास (निःस्वार्थता), और सर्व मानव जाति के सरदार सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मार्ग पर चलने का प्रश्न करता हूँ, और यह कि वह इस कार्य को जीवन में और मरने के बाद कोष बना दे। निःसंदेह वह इसका स्वामी और उस पर शक्तिवान है। तथा अल्लाह तआला हमारे ईश्दूत मुहम्मद सल्लल्लाहु

अलैहि व सल्लम, आपकी संतान तथा सभी साथियों पर दया और शांति अवतरित करे।